# तोत्तोचान उर्फ खिड़की पर खड़ी लड़की

❑ रानी सिंह

शिक्षा जगत में अनेक पुस्तकों को क्लासिक का दर्जा हासिल है । लेकिन इसे विडंबना ही माना जायेगा कि शिक्षक-वर्ग का एक बड़ा तबका इन पुस्तकों से लगभग अपरिचित है । जो शिक्षक परिचित हैं, वे भी इन पर विमर्श में सक्रिय नहीं दिखते, जबकि इनमें से अधिकांश पुस्तकें तो शिक्षकों के लिए प्रतिश्रुत हैं । यहां शिक्षकीय नजरिये से इन पुस्तकों पर विमर्श की योजना है ।

**ता**त्तोचान उर्फ खिड़की पर खड़ी लड़की। एक ऐसी नन्हीं लड़की जिसे ऊधमी मानकर स्कूल से निकाल दिया जाता है। यह कोई नई घटना या अजूबा नहीं है। दुनिया में ऐसे तमाम स्कूल होंगे, जहां से बहुत से बच्चे प्रतिवर्ष इसलिए निकाल दिए जाते हैं कि वे ऊधमी हैं, अनुशासनहीन हैं, पढ़ने-लिखने में कमजोर हैं, ऐसे ही कई आरोप। उन बच्चों का हश्र क्या होता होगा यह पता नहीं। लेकिन यह तो तय है कि शिक्षा देने वाले महानुभावों की दृष्टि में वही बच्चे पढ़ने लिखने के काबिल हैं जो देश, समाज या संस्था के दृष्टिकोण से बनाये मानदंडों पर खरे उतर सकें। दूसरी ओर यह कहते भी नहीं थकते कि दुनिया में सभी बच्चों को शिक्षा भी मिलनी चाहिए। इस अन्तर्विरोध से पैदा होते हैं ड्राप आउट बच्चे और अनौपचारिक (नान फॉरमल) आदि शिक्षा के भेद। इन तमाम कोशिशों के बावजूद हम बच्चों की दुनिया को ठीक से समझने, उनसे सीखने और उन्हें दिशा देने में कहां असफल हो रहे हैं। क्या जरुरी नहीं कि एक बार ठहर कर ईमानदारी से सोचें कि ऐसा क्यों हो रहा है ?

इसे समझने के लिए हमें तो-मो-ए-गा-कु-एन के बच्चों, शिक्षकों और वहां के प्रधानाध्यापक सोसाकु कोबायाशी से मिलना आवश्यक है। दरअसल ''तोत्तोचान'' तोमोए स्कूल, वहां के वातावरण, सासाकु कोबायाशी वहां के प्रधानाध्यापक के बच्चों के साथ में रिश्तों की कहानी, उस नन्हीं लड़की की जुबानी है, जिसे किसी दिन स्कूल से शैतान होने का ठप्पा लगाकर निकाल दिया गया था। वह लड़की है पुस्तक की लेखिका तेत्सुको कुरोयानागी। (इस पुस्तक को हिन्दी में सरल सहज, गतिशील अनुवाद का श्रेय पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा को है।) उन्हीं के शब्दों में ''मेरा दाखिला तोमोय में न हुआ होता और मैं श्री कोबायाशी से नहीं मिली होती तो शर्तिया मेरे माथे पर खराब लड़की का ठप्पा लग चुका होता और आज मैं कुंठाओं से भरी एक भ्रमित महिला होती।'' तोत्तोचान, भले ही सूदूर पूर्व एशिया में एक देश जापान की एक नन्हीं बालिका की कथा हो, लेकिन क्या फर्क पड़ेगा अगर वह जापान की न होकर भारत, उरुग्वे या ग्रेट ब्रिटेन की होती ? बच्चों की दुनिया और अपने आसपास की दुनिया को समझने का तरीका लगभग सारी दुनिया में एक-सा ही होता है। आखिर, अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के अलावा बच्चों को और क्या चाहिए होता है ? खूब सारा प्यार, यह विश्वास कि जैसा उलट-पुलट कर वह अपने आसपास को समझना चाहता है उसे समझने दिया जायेगा, जहां वह यह सब कर रहा है पूर्णत: सुरक्षित है। सिर्फ इसी वातावरण में उसकी जिज्ञासाएं मरती नहीं है। वह अपने तमाम अनुभवों से बहुत कुछ सीखता है यह वातावरण परिवार

समाज के अलावा विद्यालय ही प्रदान कर सकता है। विद्यालय में भी उसका सबसे अधिक अपना उसका शिक्षक ही होता है। तोमोए में सोसाकु कोबायाशी ने यह वातवारण बच्चों को समुचित रुप से प्रदान किया है।

अध्यापन एक पेशा जरूर है पर उस तरह का नहीं जो एक इसांन को मशीनों या फाइलों के बीच रहकर करना पड़ता है। इस पेशे में जीवन से भरे ऊर्जावान बच्चों के साथ संबंध बनाना और उन्हें धैर्य के साथ समझना पड़ता है और सबों को अलग-अलग समझना पड़ता है जिसमें सामान्य से अधिक संवेदनशीलता की मांग होती है। तोत्तोचान का अपने प्रधानाध्यापक के बारे में यह मंतव्य - ''पहली बार किसी ऐसे व्यक्ति से मिली थी जो उसे सच में अच्छा लगता हो। असल में इससे पहले किसी ने उसे इतनी देर बोलते हुए नहीं सुना था। और तो और, उसे सुनते समय हेडमास्टर जी ने एक बार भी जम्हाई नहीं ली थी।''

बच्चों में छोटी-छोटी सी बाते हीं कितनी स्फूर्ति भरती है- जैसे तोत्तोचान को कक्षा में बैठने की व्यवस्था अनूठी लगी थी। बच्चों को बैठने का स्थान निश्चित नहीं था जहां भी उनकी इच्छा हो बैठ सकते थे। ''पहली घंटी शुरू होते ही शिक्षिका दिन भर मे जिन विषयों को पढ़ाना होता था, जिन प्रश्नों के उत्तर लिखने होते थे, उनकी सूची बना देती थी और बच्चों से कहती ''अब तुम्हें जहां से शुरु करना हो करो।''

बड़े-बड़े उपदेशात्मक भाषणों के बजाय बच्चों की भाषा में बच्चों से बातें करना जैसे खाने में ''कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से।''

बच्चों के साथ एक चार दीवारी के भीतर वार्तालाप, पुस्तकें उनके अनुभवों में उतना इजाफा नहीं कर सकती, जितना अपने आसपास की प्रकृति और परिवेश - ''तितलियां अब भी फूलों की मदद करने में व्यस्त थी, हवा में पक्षियों की कलरव की गूंज थी। तोत्तोचान की खुशी अंदर समा नहीं पा रही थी।'' बच्चे कब इतनी खुशी महसूस करते हैं शायद तब जब शिक्षक भी उनकी खुशी में हिस्सेदार होता है।

पखाने में अपना बटुआ ढूंढती तोत्तोचान को उसके प्रधानाध्यापक ने यह बिल्कुल ही नहीं कहा कि यह क्या कर रही हो छोड़ो इसे, यह गन्दा काम है, बस इतना कि ''सब होदी में डाल देना।'' स्कूल में लगे शिविर में बच्चों को जिम्मेदार समझने का अनुभव हो या रोमांचकारी खोले और खेल में सब्जियों का पुरस्कार, तोत्तोचान द्वारा पुरस्कारों का

तोत्तोचान का रेखांकन

जीतना। बच्चों का सबसे खराब कपड़े पहनकर विद्यालय आना ताकि बच्चे खेलते समय कपड़ों को कीचड़ में सान डालें, फाड़ डालें, तो किसी को तकलीफ न हो। यह सब कुछ हमें बताता है कि सोसाकु कोबायाशी बच्चों के प्रति कितने संवेदनशील थे। बच्चों के लिए अलग-अलग अनुभव प्राप्त करने के रास्ते. अपने सीमित दायरे में रोमांचकारी अनुभव, स्वतंत्र होकर कार्य करने का वातारण, उनको सीखने को प्रेरित करता है। ''तोमोए गकुएन में हर दिन तोत्तोचान के लिए नए आश्चर्य से भरा था। स्कूल जाने की ललक मन में ठाठे मारती कि दिन जल्दी उगता

नहीं लगता।'' बच्चों में स्कूल जाने की ललक एक कल्पनाशील शिक्षक नित नई कल्पनाओं द्वारा दे सकता है।

बच्चों को स्वतंत्र ढंग से सीखने में सिखाने वालों का धैर्य और समझ बेहद प्रभावकारी होता है। बेहेतर बोलना सिखाने में बच्चों के साथ ऊंऽऽ तकनीक इस बात की गवाह है कि बच्चों में अपने किए के या अपने करने में विश्वास जगाने की कला भी शिक्षक द्वारा उद्‌भूत होती है।

''आंखे तो हों पर सौंदर्य दिखे ही नहीं, कान हों पर संगीत न सुनाई दे, दिमाग हो पर सत्य अबूझा ही रह जाए, दिल हो पर वह दले ना ही दहके।'' इन्हीं सब स्थितियों से डरना चाहिए। ऐसा हैडमास्टर जी कहते थे।'' लेखिका के उदगार सोसाकु कोबायाशी के लिए हैं क्योंकि कोबायाशी लिखित शब्दों पर जोर देकर बच्चों में ऐंद्रिय-बोध, उनकी सहज ग्रहणशीलता को खत्म करने या कम करने के विरोधी थे।

तोत्तो चान का रेखांकन

ताकाहाशी और यासुकीचान के साथ पोलियो से विकलांग छात्र इस बात के गवाह है कि शिक्षक का बच्चों के प्रति व्यवहार बच्चों के सीखने, उनमें आत्मविश्वास जगाने, उन्हें अपने साथियों के प्रति संवेदनशील बनाने में बहुत सहायक होता है। तोमोय की एक शिक्षिका जिसे ताकाहाशी जो बौना था से यह पूछना ताकाहाशी क्या तुम्हारे पूंछ है ? साधारण लगा था पर सोसाकु कोबायाशी को नहीं जिसके लिए उन्हें शिक्षिका को अकेल में बुलाकर नाराजगी भी जाहिर करनी पड़ी थी।

''तुम सच में एक अच्छी बच्ची हो'' खुद अपने बारे में मुझे तय कर पाना असंभव लगता है कि उनके बार-बार दोहराएं गए इस कथन ने मुझे किस सीमा तक संबल दिया होगा।

एक गांव में रहता किसान, कुम्हार, बढ़ई या एक आम आदमी खुद भी बच्चों को कुछ सिखा सकता है ऐसा कितने शिक्षक महसूस करते हैं पर तोत्तोचान के तोमोए स्कूल के प्रधानाध्यापक ने इसे समझा था। जिसका लेखिका ने जिक्र खेतीबाड़ी के शिक्षक में किया है।

मेरा मन दु:ख से भर उठता है कि अगर युद्ध न हुआ होता तो न जाने कितने बच्चे उनके स्नेह संरक्षण में पढ़ सकते थे। इतने उत्साह और परिश्रम से बच्चों के सपनों को साकार करने वाला यह स्कूल एक रात द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका में जल गया। लपटों की विनाश लीला के बीच हैडमास्टर जी सड़क पर खड़े होकर तोमोय को जलता देखते रहे । हमेशा की तरह वह अभी भी अपना वही पुराना वाला सूट पहने थे। उनके हाथ जेबों में थे। हम अब कैसा स्कूल बनायें। उन्होंने अपने पास खड़े बेटे तोमोय से पूछा। श्री कोबायाशी का बच्चों के लिए प्यार और शिक्षा के प्रति समपर्ण उन लपटों से कहीं अधिक शक्तिशाली था जिनमें घिरकर तोमोय का स्कूल जल रहा था। हेडमास्टर जी अब भी नहीं टूटे थे।

''तोत्तोचान'' में लेखिका ने अपने प्रधानाध्यापक, अपने स्कूल के संस्मरण जिस सहजता रोचकता से अभिव्यक्त किये है उसका दुनिया में अनेकानेक भाषाओं में अनुवाद और उसकी मांग इस पुस्तक की लोकप्रियता सिद्ध करती है और यह भी कि एक शिक्षक के लिए यह पुस्तक कितनी उपयोगी है? ◆